अध्याय 5

राजा से एस्तेर का निवेदन

यहूदियों की विजय गाथा अध्याय 5 से प्रारंभ होती है। मोर्दकै के निवेदन से सहमत होकर, एस्तेर, यहूदियों की ओर से राजा से हस्तक्षेप करने के लिए, यह न जानते हुए कि वह जीवित रहेगी या फिर उसे जान से हाथ धोना पड़ेगा, राजा के सम्मुख जाती है। राजा ने उसका स्वागत किया और उसने राजा और हामान को अगले दिन की भोज के लिए निमंत्रित किया। उस भोज में, उसने उन्हें अगले दिन की भोज के लिए भी निमंत्रित किया। घमण्ड से चूर होकर हामान, रानी के भोज से चला गया, बस केवल मोर्दकै से सम्मान न प्राप्त करने के कारण अति क्रोधित हो गया। घर लौटने के पश्चात, हामान ने अपनी सफलता, अपनी पत्नी व मित्रों के साथ मनाई, लेकिन उसने मोर्दकै की धृष्टता के कारण बड़ी निराशा व्यक्त की। इसके प्रत्युत्तर में, उन्होंने उसे एक फाँसी का खम्भा बनाने का सुझाव दिया ताकि वह उसमें मोर्दकै को फाँसी दे सके। वह उनके इस षड्यंत्र से सहमत हुआ और उसने फाँसी का खम्भा बनाया।

एस्तेर का राजा से सफलतापूर्वक भेंट (5:1-4)

[1]तीसरे दिन एस्तेर अपने राजकीय वस्त्र पहिनकर राजभवन के भीतरी आँगन में जाकर, राजभवन के सामने खड़ी हो गई। राजा राजभवन में राजगद्दी पर भवन के द्वार के सामने विराजमान था; [2]और जब राजा ने एस्तेर रानी को आँगन में खड़ी हुई देखा, तब उसने प्रसन्न होकर सोने का राजदण्ड जो उसके हाथ में था उसकी ओर बढ़ाया। तब एस्तेर ने निकट जाकर राजदण्ड की नोक छुई। [3]तब राजा ने उससे पूछा, "हे एस्तेर रानी, तुझे क्या चाहिये? तू क्या माँगती है? माँग और तुझे आधा राज्य तक दिया जाएगा।" [4]एस्तेर ने कहा, "यदि राजा को स्वीकार हो, तो आज हामान को साथ लेकर उस भोज में आए, जो मैं ने राजा के लिये तैयार किया है।"

मोर्दकै को दी गई प्रतिज्ञानुसार, एस्तेर राजा के सम्मुख अपने लोगों के लिए सहायता मांगने के लिए गई।

आयत 1. एस्तेर ने मोर्दकै से अपने लिए शूशन के यहूदियों से तीन दिन तक उपवास करने के लिए कहा, जबकि उसने और उसकी "सहेलियों" ने भी ऐसा ही किया (4:16)। इसलिए, शब्द **तीसरे दिन** का अर्थ "जब उपवास खत्म हुआ," है।[1]

सी. एफ. कील के अनुसार उपवास “पहले दिन के अपराह्न से तीसरे दिन सुबह, अर्थात् 40 से 45 घण्टे” तक रहा।[2]

उपवास के पश्चात एस्तेर ने **राजकीय वस्त्र पहना**। उपवास (और अनुमानतः प्रार्थना) करके उसने अपने आपको राजा से भेंट करने के लिए तैयार किया था; और अब बाहरी रूप से जितना सुन्दर वह दिख सके, उसके लिए भी उसने अपने आपको तैयार कर लिया।[3] संभवतः “राजकीय वस्त्र” पहनने का तात्पर्य यह है कि नृपोचित और आकर्षक दिखने के लिए जो कुछ वह कर सकती थी, उसने वह किया। अक्षरशः “राजकीय वस्त्र” (מַלְכוּת, *मलकूत*) का अर्थ “राजसी” है, लेकिन इस वक्तव्य में प्रयोग किए गए क्रिया (לָבַשׁ, *लाबाश*) का अर्थ वस्त्र पहनना है। एस्तेर राजा के सम्मुख फारस की रानी के रूप में अपनी “राजसी” भूमिका में उपस्थित होना चाहती थी।

एस्तेर **राजभवन के भीतरी आँगन में जाकर, राजभवन के सामने** [“राजगद्दी के सामने” (TEV)] **खड़ी हो गई। राजा राजभवन में राजगद्दी पर भवन के द्वार के सामने विराजमान था**;[4] स्पष्ट रूप से, राजा राजभवन के एक भाग में रहकर अपने कार्यों का संचालन किया करता था, जिसका निर्माण केवल उसके प्रयोग के लिए ही किया गया था।

आयत 2. दुविधा तब उत्पन्न हो जाता है जब कहानी यह बताती है कि **राजा ने एस्तेर रानी को आँगन में खड़ी हुई देखा**। फैसले की घड़ी आ पहुँची थी: क्या एस्तेर को राजा जीवन दान देगा या फिर वह उसे मौत के घाट उतरवा देगा? लेखक ने राजा के फैसले को इन साधारण शब्दों में व्यक्त किया है: **तब उसने प्रसन्न होकर सोने का राजदण्ड जो उसके हाथ में था उसकी ओर बढ़ाया।**[5]

लेखक यह विश्लेषण नहीं करता है कि एस्तेर से राजा क्यों “प्रसन्न हुआ।” हो सकता है कि एस्तेर रानी को “राजकीय वस्त्र” में देखकर राजा को उनके अच्छे दिन स्मरण आए हों[6] या फिर रानी की उपेक्षा के कारण राजा आत्म ग्लानि से भर गया हो। हो सकता है कि राजा उस समय सुदूर प्रांत से आए सुसमाचार सुनकर आनंद मना रहा था या फिर स्वादिष्ट भोजन का आनंद उठा रहा था। इस बात से विश्वासी निश्चित हो सकते हैं कि यद्यपि यह उसने किया था, लेकिन सत्य यह है कि परमेश्वर ने ही उसके मन को तैयार किया था ताकि वह एस्तेर को देखकर प्रसन्न हो। मार्क मैनगानो ने नीतिवचन 21:1 का उद्धरण प्रस्तुत किया है - “राजा का मन नालियों के जल के समान यहोवा के हाथ में रहता है, जिधर वह चाहता उधर उसको मोड़ देता है” - और यह सुझाव प्रस्तुत करता है कि राजा का मन “ईश्वरीय प्रेरणा” के द्वारा बदल दिया गया होगा।[7]

राजा ने सोने का राजदण्ड जो उसके हाथ में था उसकी ओर बढ़ाया। तब एस्तेर ने निकट जाकर राजदण्ड की नोक छुई। फारसी नक्काशी “राजा हाथ में सोने का राजदण्ड लिए, जो लगभग उसकी देह की लम्बाई के बराबर होता था और इसके एक सिरे पर एक दस्ता होता था,” चित्रित करता है।[8] क्षयर्ष का एस्तेर की ओर राजदण्ड बढ़ाने के द्वारा एस्तेर को जीवनदान मिला; उसकी योजना का प्रथम भाग सफल हुआ।

आयत 3. स्पष्ट रूप से **राजा** को बोध हो गया था कि **एस्तेर** किसी घोर समस्या का सामना कर रही थी; अन्यथा उसके सम्मुख आने के द्वारा वह अपनी प्राण को जोखिम में नहीं डालती। उपेक्षित रानी के प्रति उसकी अच्छी चित्तवृति उसके शब्दों से प्रकट होता है। उसने पूछा, **"हे एस्तेर रानी, तुझे क्या चाहिये?"** इस प्रश्न का अक्षरशः अनुवाद ऐसा भी हो सकता है "तुम कुशल हो?"[9]

राजा ने यह भी पूछा, **"तू क्या माँगती है?"** अतिशयोक्ति का प्रयोग करते हुए, उसने एस्तेर को आधा राज्य तक दे देने की प्रतिज्ञा की। इस बात की कम संभावना है कि एस्तेर, राजा के इस अतिव्ययी प्रस्ताव को गम्भीरता से ले। जॉयस जी. बॉल्डवीन का तर्क है कि यहाँ इस प्रस्ताव का लिखा जाना और बाद में इसको दोहराया जाना (5:6 और 7:2) यह दर्शाता है कि यह एक "पारम्परिक कहावत" थी और इसलिए इसको अक्षरशः नहीं समझा जाना चाहिए।[10] यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के लिए मरकुस 6:23 में इससे मिलता-जुलता प्रस्ताव का भयानक परिणाम निकला।

आयत 4. एस्तेर के पास केवल एक ही निवेदन था: **"यदि राजा को स्वीकार हो, तो आज हामान को साथ लेकर उस भोज में आए, जो मैं ने राजा के लिये तैयार किया है।"** "भोज" राजा के लिए तैयार किया गया था। हामान को भी निमंत्रण दिया गया लेकिन प्राथमिक न्यौताहारी राजा ही था। स्पष्ट रूप से यह निमंत्रण राजा को दिया गया था; इसमें हामान को सम्मिलित करना बाद में सोच-विचार कर जोड़ दिया गया होगा। इब्रानी भाषा में इस निमंत्रण को अक्षरशः ऐसा पढ़ा जा सकता है, "राजा आए - और हामान - आज उसके लिए जो भोज मैंने तैयार किया है।"[11]

स्पष्ट रूप से, पिछले तीन दिनों से एस्तेर उपवास और प्रार्थना के साथ-साथ कुछ और बातों की भी तैयारी कर रही थी। वह अपनी योजना की रणनीति बना रही थी कि यहूदियों को बचाने के लिए उसको क्या करना चाहिए था। वह जानती थी कि अपने पति के लिए स्वादिष्ट भोजन तैयार कर उनकी सहमति प्राप्त करना कितना प्रभावशाली हो सकता है और वह राजा उस बात से सहमति जताए जो वह उससे कहने पर थी। योजना के अंतर्गत दो भोज का आयोजन था: प्रथम राजा के स्नेह को सुनिश्चित करना (और राजा यह जानकर कि वह उसकी प्रशंसा करती है, हामान को निशस्त्र करना) और दूसरा राजा से अपने लोगों की रक्षा के लिए निवेदन करना (और हामान का सामना करना)। यह सुनिश्चित करने के लिए एस्तेर को हामान से राजा की उपस्थिति में यह बताना आवश्यक था जिससे एस्तेर द्वारा उसके विरुद्ध लगाए गए आरोप का वॉल्यूमन करने का उसे अवसर न मिले। जब एस्तेर ने राजा को अपने साथ भोज करने के लिए निमंत्रण दिया था तो हो सकता है कि प्रथम भोज पहले ही तैयार कर लिया गया था।

बेबीलोनी तालमूड एस्तेर का हामान को निमंत्रण देने के उद्देश्य का विश्लेषण करता है। कई सुझावों में से निम्न चार विश्लेषणों पर ध्यान दिया जाना महत्वपूर्ण है: (1) वह हामान के फाँसी का फन्दा तैयार कर रही थी (रब्बी एलियाजर); (2) वह चाहती थी कि जब वह उस पर दोष लगाए तो वह वहीं पर रहे (रब्बी

जोश); (3) वह उसे षड्यंत्र रचने और विद्रोह करने का अवसर नहीं प्रदान करना चाहती थी (रब्बी मीर); और (4) वह अस्थिर राजा क्षयर्ष को मन बदलने का अवसर नहीं देना चाहती थी (रब्बन गमालिएल)।[12] माइकल वी. फॉक्स ने कहा, "एस्तेर का हामान को जानबूझकर सम्मिलित करना उसकी पूर्व सुनियोजित योजना दर्शाता है। वह इस बात से भली भाँति अवगत थी कि उसे उसको यथाशीघ्र पराजित करना है और उसके पीठ पीछे राजा (और अन्य लोगों) से परस्पर वार्तालाप करने से उसे रोकना था।"[13] ये योजनाएं "एस्तेर का सावधानीपूर्ण व उत्कृष्ट कूटनीतिज्ञ का उभरता हुआ गुण है।"[14]

चूँकि राजा ने ऐसा अतिव्ययी प्रस्ताव रखा था, तो एस्तेर ने तुरंत यहूदियों को जीवन दान देने का प्रस्ताव क्यों नहीं रखा? अधिक संभावित बात यह है कि एस्तेर ने पहले ही योजना बना ली थी और वह जानती थी कि वह क्या करने जा रही है और उसको अपनी योजना पर भरोसा था। इसके साथ ही, वह यह भी जानती थी कि राजा का "[उसके] आधा राज्य" की प्रतिज्ञा आसानी से टूट सकता था। उसके इस अभिव्यक्ति का प्रयोग एक सनक था, तात्कालिक लगाव था जो क्षण भर में ही समाप्त हो सकता था, विशेषकर यदि उसके पास दूसरों से यह पूछने का अवसर हो कि उसे उसके इस विनती के साथ क्या करना चाहिए। वह चाहती थी कि राजा उसकी विनती को दृढ़ आधार के साथ स्वीकृति प्रदान करे। वह जानती थी कि राजा के निर्णय का अंतिम रूप लेने से पहले उसको कई बार "सहमति" जताना होगा।

एस्तेर का प्रथम भोज (5:5-8)

5तब राजा ने आज्ञा दी, "हामान को तुरन्त ले आओ, कि एस्तेर का निमंत्रण ग्रहण किया जाए।" अतः राजा और हामान एस्तेर के तैयार किए हुए भोज में आए। 6भोज के समय जब दाखमधु पिया जाता था, तब राजा ने एस्तेर से कहा, "तेरा क्या निवेदन है? वह पूरा किया जाएगा। तू क्या माँगती है? माँग, और आधा राज्य तक तुझे दिया जाएगा।" 7एस्तेर ने उत्तर दिया, "मेरा निवेदन और जो मैं माँगती हूँ वह यह है, 8कि यदि राजा मुझ पर प्रसन्न है और मेरा निवेदन सुनना और जो वरदान मैं माँगूँ वही देना राजा को स्वीकार हो, तो राजा और हामान कल उस भोज में आएँ जिसे मैं उनके लिये करूँगी, और कल मैं राजा के इस वचन के अनुसार करूँगी।"

राजा और हामान, एस्तेर के भोज में सम्मिलित हुए। अपनी योजना के अंतर्गत, रानी अपना अगली कदम उठाने के लिए तैयार थी।

आयत 5. राजा अपने वचन पर स्थिर रहा, **कि एस्तेर का निमंत्रण ग्रहण किया जाए** (अक्षरशः, "एस्तेर की शब्दों के [अनुसार])। उसने अविलंब **हामान** को बुलाया, और वे दोनों एस्तेर के महल में **एस्तेर के तैयार किए हुए भोज** में गए। यद्यपि हामान राजा का प्रधानमंत्री था, उसको राजा और रानी के साथ भोज करने

का अवसर प्राप्त हुआ था, तो उसने परिस्थिति का आंकलन करते हुए अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की। वह अत्यधिक प्रसन्न हुआ और निमंत्रण से गदगद हो उठा।

आयत 6. भोज के समय, जब **दाखमधु पिया जाता था**, तो **राजा** ने **एस्तेर** को उसकी इच्छा के बारे में पूछा : **"तेरा क्या निवेदन है? वह पूरा किया जाएगा। तू क्या माँगती है?"** आयत 3 के भाँति, जो कुछ वह चाहती थी वह उसको देने के लिए तैयार था, **आधा राज्य तक** देने को वह तैयार था। दाखमधु पीये जाने का वर्णन, एस्तेर का राजा की सहमति प्राप्त करने की दूसरी योजना थी। जब लोगों का पेट भरा रहता है तो वे आमतौर पर अपनी सहमति अधिक व्यक्त करते हैं और दाखमधु पीने के पश्चात मोरचाबन्दी ढीली पड़ जाती है। फारसी साम्राज्य में भोज के समय दाखमधु पीने का प्रचलन था। आयत 6 में जैसा लिखा है "जब वे दाखमधु पी रहे थे" का अक्षरशः अर्थ "दाखमधु के भोज पर।"

आयतें 7, 8. एस्तेर का दूसरा निवेदन उसके पहले निवेदन के समान ही था: कि **राजा और हामान** दोबारा (अगले दिन) एक और **भोज** के लिए आएं। एस्तेर ने बताया कि उस समय वह राजा को बताएगी कि वह क्या चाहती है: **"मैं राजा के इस वचन के अनुसार करूँगी"** (अक्षरशः "राजा के वचन के अनुसार")। इसका यह अर्थ हुआ, "तब मैं राजा को अपने मन की बात बताऊँगी" (देखें 5:3)। लगातार दो दिनों तक दो भोज का आयोजन कर राजा को उसका निवेदन सुनने के लिए प्रेरित करना था; जैसा पहले कहा गया है कि वह "एस्तेर की पूरी योजना का सावधानीपूर्वक बनाया गया कूटनीति का भाग है।"[15]

हामान का मोर्दकै को मृत्युदण्ड देने का षड्यंत्र (5:9-14)

9उस दिन हामान आनन्दित और मन में प्रसन्न होकर बाहर गया। परन्तु जब उसने मोर्दकै को राजभवन के फाटक में देखा, कि वह उसके सामने न तो खड़ा हुआ, और न हटा, तब वह मोर्दकै के विरुद्ध क्रोध से भर गया। 10तौभी वह अपने को रोककर अपने घर गया; और अपने मित्रों और अपनी स्त्री जेरेश को बुलवा भेजा। 11तब हामान ने उन से अपने धन का वैभव, और अपने बाल-बच्चों की बढ़ती और राजा ने उसको कैसे कैसे बढ़ाया, और अन्य सब हाकिमों और अपने और सब कर्मचारियों से ऊँचा पद दिया था, इन सब का वर्णन किया। 12हामान ने यह भी कहा, "एस्तेर रानी ने भी मुझे छोड़ और किसी को राजा के संग, अपने किए हुए भोज में आने न दिया; और कल के लिये भी राजा के संग उसने मुझी को नेवता दिया है। 13तौभी जब जब मुझे वह यहूदी मोर्दकै राजभवन के फाटक में बैठा हुआ दिखाई पड़ता है, तब तब यह सब मेरी दृष्टि में व्यर्थ लगता है।" 14उसकी पत्नी जेरेश और उसके सब मित्रों ने उससे कहा, "पचास हाथ ऊँचा फाँसी का एक खम्भा बनाया जाए, और सबेरे राजा से कहना कि उस पर मोर्दकै लटका दिया जाए; तब राजा के संग आनन्द से भोज में जाना।" इस बात से प्रसन्न होकर हामान ने वैसा ही फाँसी का एक खम्भा बनवाया।

हामान जैसे ही एस्तेर के भोज से निकला, वह मोर्दकै के अधीनता से खिन्न हो उठा। उसने इस विषय पर अपनी पत्नी व मित्रों से चर्चा किया।

आयत 9. हामान आनन्दित व मन से प्रसन्न था, जिसका अर्थ यह है कि वह "आनन्द व घमण्ड से भरा हुआ था।" इस वाक्यांश का अनुवाद केरी ए. मूर ने 1 शमूएल 25:36 से उद्धृत करते हुए "आनन्दित व उल्लासित" किया है और इसका विश्लेषण इस प्रकार किया है कि "उल्लासित" का अक्षरशः अर्थ "मन से प्रसन्न होना" है।[16] हामान को ऐसा इसलिए लगा क्योंकि उसको राजा और रानी के साथ भोज करने का सम्मान मिला था। उसके घमण्ड की धज्जी तब उड़ी जब वह **राजभवन के फाटक पर बैठे मोर्दकै** के सामने से गुजरा और जब इस यहूदी ने उसके सम्मुख **खड़े होने या थर्राने** से इनकार कर दिया था। एडेल बर्लिन के अनुसार, "मोर्दकै की उपस्थिति ही हामान को दुःखी करती थी। लेकिन इससे बढ़कर, मोर्दकै *बैठा* हुआ था। वह न तो खड़ा हुआ और न हटा (आयत 9), वही अकेला नहीं झुका।"[17] हामान की प्रसन्नता तब उड़ गई और वह **मोर्दकै के प्रति विरुद्ध क्रोध से भर गया**। उसने एक यहूदी द्वारा उसको सम्मान न देने के कारण अपना दिन बर्बाद किया - और वस्तुतः उसने अपने जीवन को ही नष्ट करने की ठानी!

अध्याय 5 से 7 तक, हामान, कहानी का निर्विरोध खलनायक होने के साथ-साथ वह एक हास्यास्पद व दुखद चरित्र भी है। उसका घमण्ड लगभग हास्यास्पद है[18] और यह कि एक व्यक्ति द्वारा उसकी महानता का सम्मान न करने से वह क्रोधित हो जाता है, यह उसकी दयनीय स्थिति है। जबकि वह राजा से चालाकी कर सकता था लेकिन रानी ने उसके साथ चालाकी की। उसने स्वयं को एक प्रभावशाली व्यक्ति के रूप में देखा, फिर भी वह दूसरों के द्वारा - मोर्दकै का आदर न करने के कारण, एस्तेर की चापलूसी के द्वारा, और अपने मित्रों के अनुमोदन के द्वारा प्रभावित हुआ। कहानी के अंत में उसको बुराई के बादशाह की बजाय दुःखी मजाक करने वाले व्यक्ति के रूप में चित्रित किया गया है।

आयत 10. क्रोध के बावजूद, **हामान ने अपने क्रोध को रोके रखा**। उसने तुरंत और **व्यक्तिगत** रूप से मोर्दकै पर हमला नहीं किया। बल्कि, वह अपने घर गया और उसने **अपनी पत्नी और मित्रों** को अपनी सफलता और समस्या पर बातें करने के लिए बुलवा भेजा। "बुलवा भेजा" का अक्षरशः अर्थ "भेजा और लाया" है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि उसने सेवकों या दासों को उनको ढूंढकर अपने घर में लाने के लिए कहा (देखें लूका 14:17)।

आयतें 11, 12. जब वे आए, तो **हामान** ने अपने वैभव का उनसे **वर्णन किया**। उसने **अपने धन का वैभव, और अपने बाल-बच्चों की बढ़ती**, राजा द्वारा सब हाकिमों और कर्मचारियों से ऊँचा पद दिया जाना, और रानी के **भोज** में राजा के साथ निमंत्रित किए जाने के सौभाग्य के बारे में वर्णन किया।

हामान के पुत्रों के विषय में जिस इब्रानी शब्द का अनुवाद "गिनती" (רֹב, *रोब*) किया गया है, का अक्षरशः अर्थ "भीड़" है। तालमूड में रामी बेन अब्बा के अनुसार हामान के 208 पुत्र थे।[19] यद्यपि, यह गिनती अक्षरों की संख्यासूचक मूल्य

निर्धारित कर ठहराया गया है इसलिए इसको गम्भीरता से नहीं समझा जाना चाहिए। एस्तेर 9:10 के अनुसार उसके कम से कम "दस पुत्र" थे, जो बहुत महत्वपूर्ण संख्या है। हेरोडोटस ने लिखा कि फारसी "पुरुषत्व का मुख्य प्रमाण लड़कों के बड़े परिवार का पिता होने" पर विश्वास करते थे।[20]

आयत 13. यद्यपि हामान के पास धन्यवादित व संतुष्ट होने के कई कारण थे लेकिन उसने माना कि विद्रोही **मोर्दकै** की उपस्थिति के कारण वह आनंद नहीं उठा पा रहा था या उसको मन की शांति नहीं थी। उसने कहा, **"यह सब मेरी दृष्टि में व्यर्थ लगता है"** (अक्षरशः "यह मुझे नहीं सोहता है")। स्पष्ट रूप से, न तो उसने और न वहाँ उपस्थित लोगों में से किसी ने भी उसके अंगीकार में कुछ असामान्य पाया। ऐसा प्रतीत होता है मानो किसी ने ऐसा कहा हो, "ज़रा रुक जाओ! जब कि तुम्हारे पास आनंद उठाने के लिए बहुत कुछ है तो तुम एक व्यक्ति के व्यवहार के कारण अपने जीवन को क्यों बर्बाद कर रहे हो?"

आयत 14. हामान की **पत्नी** और **मित्रों** ने उसे इस समस्या से छुटकारा कैसे पाया जाए, के बारे में सुझाव दिया। उन्होंने उसे बताया, **"पचास हाथ ऊँचा फाँसी का एक खम्भा बनाया जाए, और सबेरे राजा से कहना कि उस पर मोर्दकै लटका दिया जाए।"** उनका यह विचार था कि चूँकि हामान का राजा के साथ अच्छा संबंध था और यहाँ तक कि उसने रानी के मेज में उनके साथ भोजन किया था तो जो भी वह मांगेगा, राजा उसका इनकार नहीं करेगा!

इब्रानी शब्द עֵץ (*'एत्स*) का अनुवाद फाँसी है जिसका अक्षरशः अर्थ "पेड़" या "लकड़ी" है। इस संदर्भ में यह लकड़ी की वस्तु संभवतः लकड़ी का खम्भा है जिसमें अपराधी को लटकाकर मृत्युदण्ड दिया जाता था।[21] केरेन एच. जोब्स के अनुसार, "हेरोडोटस के लिखित प्रमाण एवं पत्थर की नक्काशी, दोनों से हम जानते हैं कि फारसियों ने लकड़ी के खम्भे की 'फांसी' बनाई जिस पर अपराधियों को लटकाते थे, वे अपराधियों को गला घोंटकर नहीं मारते थे।[22]

हामान को यह सुझाव दिया गया कि वह **पचास हाथ** अर्थात् लगभग "पचहत्तर फूट" (NIV) ऊँचा फाँसी का खम्भा बनाए। चूँकि किसी भी फंदे को इतना ऊँचा होने की आवश्यकता नहीं है तो इतना बड़ा पैमाना क्यों? (1) हो सकता है कि हामान के मित्रों की मंशा यह नहीं था कि उनके सुझाव को अक्षरशः समझा जाए; "पचास हाथ" ऊँचे खम्भे का साधारण अर्थ यह है कि "उसको ऊँचाई पर लटकाया जाए।" (2) पाठ यह नहीं बताता है कि वास्तव में हामान ने इतना ऊँचा फांसी का खम्भा बनाया; यह केवल इतना कहता है कि इतने ऊँचे खम्भे का सुझाव प्रस्तुत किया गया। (3) यदि फांसी का खम्भा राजमहल की दीवार[23] पर बनाया जाता तो जमीन से फांसी की ऊँचाई लगभग पचास हाथ हो सकती थी।[24] यद्यपि, इन तर्कों में इतना दम नहीं है क्योंकि 7:9 फांसी की ऊँचाई ("पचास हाथ ऊँचा") दोहराता है और यह भी बताता है कि यह हामान के घर पर बनाई गई थी न कि राजमहल पर। इतनी ऊँची फांसी का खम्भा यह प्रदर्शित करता है कि हामान के समर्थकों की यह इच्छा थी कि शूशन में मोर्दकै का खुल्लम-खुल्ला तमाशा बनाया जाए; वे उन यहूदियों को शर्मिंदा और नीचा दिखाना चाहते थे, जिन्होंने हामान

के अधिकार को तुच्छ जाना था।

इस बात से प्रसन्न होकर हामान ने वैसा ही फाँसी का एक खम्भा बनवाया। उसने समझा कि उसकी समस्या का समाधान जल्दी होने वाला है: उसका शत्रु मारा जाएगा, और वह रानी के दूसरे **भोज**, जो वह उसके व राजा के लिए तैयार कर रही थी, में आनंद मनाते हुए जा सकेगा। तत्पश्चात, अपनी शक्ति व सम्पन्नता का लाभ उठाते हुए वह प्रसन्नतापूर्वक जी सकेगा। हामान और उसके मित्रों की दृष्टिकोण से, फांसी का खम्भा और मोर्दकै की मृत्युदण्ड, हामान की समस्याओं का समाधान करेगा।

इसके विपरीत, यहूदियों का भविष्य अंधकारपूर्ण दिखाई देता है। मोर्दकै को फांसी पर चढ़ाया जाने वाला है और उसकी मृत्यु के साथ ही यहूदियों के बचने की उम्मीदों पर पानी फेर जाएगा।

अनुप्रयोग

एस्तेर का बलिदानपूर्ण दृष्टिकोण (5:1)

एस्तेर का अपने लोगों की सहायता करने के लिए स्वयं अपने को खतरे में डालने की इच्छा की तुलना किससे कर सकते हैं?

इतिहास की परिक्षेत्र में, यह क्रिमियन युद्ध के दौरान बालाक्लावा की लड़ाई में अंग्रेज सैनिकों के साहसिक कदम का संस्मरण कराता है: 1854 में 600 से अधिक घुड़सवार सैनिक खुले मैदान में सीधे शत्रुओं के तने बन्दूक की ओर बढ़ रहे थे। यह उन्होंने अपने देश एवं जो आज्ञा उनको मिला था, उसके लिए किया। उनमें से एक तिहाई से अधिक सैनिक मारे गए। अलफ्रेड टेन्नीसन ने इस घटना को अपनी कविता “द चार्ज ऑफ़ द लाइट ब्रिगेड” में अमर बना दिया।[25]

साहित्य में, एस्तेर की स्वयं बलिदान करने की इच्छा की तुलना चार्ल्स डिकन्स द्वारा 1859 में लिखा उपन्यास *ए टेल ऑफ़ टू सीटीज* की कहानी से की जा सकती है। इस कहानी में, एक कुलीन दोषारोपित व्यक्ति, चार्ल्स डारनी के स्थान पर एक बदनाम वकील, सीडनी कार्टन को मृत्युदण्ड दिया जाता है। पुस्तक के अन्त में, डिकन्स ने सीडनी कार्टन को ऐसा बोलते हुए कल्पना की है, “जो मैं कर सकता था उससे यह कहीं अधिक उत्तम कार्य है ...।”[26]

बाइबल में, एस्तेर के निस्वार्थ भाव को मसीह के लिए प्रेरितों के समर्पण से किया जा सकता है। उनको यीशु के नाम से प्रचार न करने की आज्ञा दी गई; लेकिन उन्होंने उन निर्देशों को मानने से इनकार कर दिया (प्रेरितों. 4:18-20; 5:28, 29), यह जानते हुए भी कि यदि उन्होंने उनकी आज्ञा नहीं माना तो वे अपने प्राणों को खतरे में (अंततः ऐसा हुआ भी) डाल रहे हैं। वे उत्तम कार्य के लिए अपने प्राणों की हानि उठाने के लिए तैयार थे। उसी तरह, एस्तेर का अपने लोगों के लिए जान की बाजी लगाना मसीह का सभी मानवजाति के लिए प्राण त्यागना स्मरण कराता है। उसने स्वेच्छा से “अपने आप को हमारे पापों के लिये दे दिया, ताकि हमारे परमेश्वर और पिता की इच्छा के अनुसार हमें इस वर्तमान बुरे संसार से छुड़ाए”

(गला. 1:4)।

एस्तेर का आत्मसंयम (5:4)

एस्तेर ने 5:4 में आत्मसंयम का परिपक्वता से प्रदर्शन किया है। उसको जो बात परेशान कर रही थी उसने तपाक से नहीं कही, न ही उसने "हामान की ओर उँगली उठाकर उसके सिर की माँग की।" उसने "राजा की भावनाओं के साथ खिलवाड़ नहीं किया और न उसको उकसाने का कार्य किया।" वह "आवेश में नहीं आई, आंसू बहाना शुरू नहीं किया या उसने जल्दबाजी नहीं दिखाई।" एस्तेर "शांति और धैर्य का सिद्ध उदाहरण" प्रस्तुत करती है।[27]

क्या आप अपनी आशिषें देख सकते हैं? (5:9-14)

केरी ए. मूर ने हामान की बड़ी आशिषों के बीच एक नगण्य क्षोभ के कारण उसकी असंतुष्टि पर टिप्पणी किया है। उन्होंने लिखा, "जिस प्रकार एक छोटा सिक्का आँख के निकट रखे जाने पर पूरे सूर्य को ढांक देता है, उसी प्रकार हामान की प्रतिकार की भावना ने भी उसके सारी आशिषों को ढांक दिया था।"[28] क्लेटन विंटर्स ने कहा कि कैसे "ईर्ष्या और घमण्ड ने [हामान के] जीवन से आनंद समाप्त कर दिया था। उसके पास बहुत कुछ था और बहुत थोड़ी कमी थी; फिर भी इस थोड़ी ने उसके पूरे मनुष्यत्व पर अधिकार जमा लिया था। इस बात पर उसने मानवीय प्रवृति प्रकट की थी, लेकिन यह बहुत गलत चरित्र था।"[29]

जबकि हमको हामान का दृष्टिकोण अजीब व तर्कहीन जान पड़ता है, तो हामान पर दोषारोपण करने से पहले हमें अपने जीवन के अंदर झांककर देखने की आवश्यकता है। क्या कभी-कभी हम इसी तरह का दृष्टिकोण प्रकट करते हैं? हो सकता है कि हमारे साथ अधिकांश बातें ठीक-ठाक हों, लेकिन जब कोई बात गलत हो जाती है तो मानो ऐसा हो जाता है जैसे हमारी सारी दुनिया ही उजड़ गई हो! क्या कभी नगण्य समस्या के लिए विलाप करते हुए हम अपनी आशिषों को भूल जाते हैं?

समस्याओं से ध्यान हटाकर आशिषों को स्मरण करना इतना आसान नहीं है। कभी-कभी मेरी पत्नी कहती है, "जब आपके दांत में दर्द होता है, तब किसी अन्य बातों पर विचार करना कितना कठिन होता है।" फिर भी, जब कोई बुरी घटना घटती है, तो हमको अपनी आशिषें गिननी हैं और जो महत्वपूर्ण है उस पर ध्यान केन्द्रित करना है: उस आत्मिक जीवन के बारे में जो हमको यीशु में मिलता है। हमें यह स्मरण रखना होगा जो पौलुस ने लिखा: "हर बात में धन्यवाद करो" (1 थिस्स. 5:18)।

घमण्ड का मूल्य (5:10-12)

घमण्डी लोगों को उनके घमण्ड की उच्च कीमत चुकानी पड़ सकती है। नीतिवचन 16:18 के बारे में सोचे बिना हम हामान की उपलब्धियों के कारण

उसके घमण्ड के बारे में नहीं सोच सकते हैं: “विनाश से पहिले गर्व, और ठोकर खाने से पहिले घमण्ड होता है।” हामान उस घमण्डी व्यक्ति का उचित उदाहरण है जो अपने घमण्ड के कारण नम्र किया जाता है। दानिय्येल 4:30-37 में नबूकदनेस्सर कुछ इसी तरह का उदाहरण प्रस्तुत करता है। आयत 37 में हम पढ़ते हैं, “... उसके सब काम सच्चे, और उसके सब व्यवहार न्याय के हैं; और जो लोग घमण्ड से चलते हैं, उन्हें वह नीचा कर सकता है।” एक और उदाहरण हेरोदेस का है जिसने अपने को ईश्वर के रूप में उपासना करवाना चाहा, लेकिन उसमें “कीड़े पड़कर [वह] मर गया” (प्रेरितों. 12:22, 23)। हमें याकूब के शब्दों को स्मरण रखना चाहिए: “परमेश्वर अभिमानियों से विरोध करता है, पर दीनों पर अनुग्रह करता है” (याकूब 4:6); “प्रभु के सामने दीन बनो, तो वह तुम्हें शिरोमणि बनाएगा” (याकूब 4:10)।

समाप्ति नोट्स

[1]एफ. बी. हुये, “एस्तेर,” में *एक्सपोजीटर्स बाइबल कमेंट्री,* वॉल्यूम 4, *1 राजा-अय्यूब,* सम्पादक फ्रैंक ई. गैबलीन (ग्रैंड रैपिड्स, मिशीगनः जॉडरवैन पब्लिशिंग हाऊस, 1988), 819. [2]सी. एफ. कील, *द बुक्स ऑफ़ एज़्रा, नहेम्याह, एण्ड एस्तेर,* अनुवादक सोफिया टेलर, बिब्लिकल कमेंट्री आन दि ओल्ड टेस्टामेंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशीगनः विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, तिथि अज्ञात), 355. [3]केरी ए. मूर, *एस्तेर,* दि एंकर बाइबल, वॉल्यूम 7बी (न्यू यॉर्कः डबलडे एण्ड कम्पनी, 1971), 57. [4]आयत 1 की उत्तरवर्ती भाग का अनुवाद करना कठीन है क्योंकि यहाँ एक ही इब्रानी शब्द (בַּיִת, *बयीथ*) प्रयोग किया गया है, जिसका अक्षरशः अर्थ “घर” है, और इसका प्रयोग “राजभवन” और “भवन” दोनों के लिए किया गया है। फिर भी, अलग-अलग अनुवादों में इसके अर्थ को अलग-अलग तरीके से अभिव्यक्त किया गया है (NIV; TEV; NCV; CEV; NLT)। [5]अपोक्रिफल एडिशन्स में दीर्घ विश्लेषण पाया जाता है, जिसमें यह कहा गया है कि पहले राजा ने “क्रोधित” होकर एस्तेर को देखा और वह डर के मारे बेशुध हो गई। तब यह यह कहता है, “परमेश्वर ने राजा की आत्मा को नम्र किया,” जिससे “वह अपने राजगद्दी से उछल पड़ा,” “उसने उसे अपने बांहों में उठा लिया” और “शांतिदायक शब्दों से उसे सांतवना दिया” (एडिशन्स 15:7, 8)। यद्यपि, ये नाटकीय शब्द मूल, प्रेरणित इब्रानी पाठ का भाग नहीं है। [6]उसने फिर से उसकी सुन्दरता देखा जिसके कारण उसका मन उसके प्रति मोहित हुआ था। [7]मार्क मैनगानो, *एस्तेर एण्ड दानिय्येल,* द कॉलेज प्रेस NIV कमेंट्री (जॉप्लीन, मिसौरी: कॉलेक प्रेस पब्लिशिंग कम्पनी, 2001), 79. [8]एन्थोनी टोमासीनो, “एस्तेर,” में *जॉडरवैन इलस्ट्रेटेड बाइबल बैकग्राउंड कमेंट्री,* वॉल्यूम 3, *1 एंड 2 राजा, 1 एंड 2 इतिहास,* सम्पादक जॉन एच. वाल्टन (ग्रैंड रैपिड्स, मिशीगन: जोंडरवैन, 2009), 491. [9]माइकल वी. फॉक्स, *कैरेक्टर एण्ड आइडियोलोजी इन द बुक ऑफ़ एस्तेर,* द्वितीय संस्करण (ग्रैंड रैपिड्स, मिशीगनः विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 2001), 68. [10]जॉयस जी. बॉल्डवीन, *एस्तेर,* द टिंडेल ओल्ड टेस्टामेंट कमेंट्रीज (डॉनर्स ग्रूव, इलिनोय: इंटर-वर्सिटी प्रेस, 1984), 86.

[11]केरॉल एम. बेक्टेल, *एस्तेर,* इंटरप्रेटेशन (लुईविलः जॉन नॉक्स प्रेस, 2002), 52. [12]तालमूड *मेगिल्लाह* 15बी; फॉक्स, 72 से उधृत। [13]फॉक्स, 71-72. [14]बेक्टेल, 53. [15]लिंडा डे, *एस्तेर,* एबिंगदोन ओल्ड टेस्टमेंट कमेंट्रीज (नैशविलः अबिंगदन प्रेस, 2005), 99-100. [16]मूर, 59. [17]एडेल बर्लिन, *एस्तेर,* द JPS बाइबल कमेंट्री (फिलाडेल्फिया: ज्यूविश पब्लिकेश सोसाइटी, 2001), 55. [18]जे. जी. मेक्कोनविल ने ऐसा टिप्पणी किया कि “इन आयतों में हामान का चरम से क्रोध में त्वरित परिवर्तित होने में कुछ हास्यास्पद तत्व है - एक ऐसा तत्व जिसको अगले अध्याय में और अधिक उच्चारित किया जायेगा” (जे. जी. मेक्कोनविल, *एज़्रा, नहेम्याह, एण्ड एस्तेर,* द डेली स्टडी बाइबल

सीरीज [फिलाडेलफियाः वेस्टमिंस्टर प्रेस, 1985], 177)। [19]तालमूड *मेगील्लाह* 15बी। [20]हेरोडोटस *हिस्ट्रीज* 1.136.

[21]उसी तरह, नये नियम में, "पेड़" या "लकड़ी" (ξύλον, *खूलोन*) के लिए यूनानी शब्द का प्रयोग क्रूस के संदर्भ में किया गया है (प्रेरितों. 5:30; 10:39; 13:29; गला. 3:13; 1 पतरस 2:24)। [22]केरेन एच. जोब्स, *एस्तेर,* दि NIV एप्लीकेशन कमेंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशीगनः जॉडरवैन, 1999), 166. फारसियों द्वारा अपराधियों को बेधने का वर्णन हेरोडोटस *हिस्ट्रीज* में पाया जाता है 1.128; 3.125, 132, 159; 4.43; 6.30. [23]दूसरा मक्काबीज 15:35 से तुलना करें, जहाँ यरूशलेम की किले की दीवार पर शत्रु के सिर को लटकाया जाता था ताकि सभी उसको देख सके। [24]जेम्स बर्टन कॉफमैन एण्ड थेल्मा बी. कॉफमैन, *कमेंट्री आन एज्रा, नहेम्याह एण्ड एस्तेर* (एबिलीन, टेक्ससः ACU प्रेस, 1993), 290. [25]अल्फ्रेड टेन्नीसन, "द चार्ज ऑफ़ द लाइट ब्रिगेड," में *टेन्नीसनः रिप्रेजेनटेटीव पोएम्स,* संकलन और सम्पादक शमूएल सी. चू (न्यू यॉर्कः ओडीसी प्रेस, 1941), 50-51. [26]चार्ल्स डिकन्स, *ए टेल ऑफ़ टू सीटीज* (न्यू यॉर्कः मॉडर्न लाइब्रेरी, रैंडम हाऊस, 1992), 482. [27]चार्ल्स आर. स्विंडल एण्ड केन गायर, *एस्तेर - ए वूमन फॉर सच ए टाइम दिस,* बाइबल स्टडी गाईड (फुलरटन, कैलीफॉर्नियाः इसाइट फॉर लिविंग, 1990), 50-51. [28]मूर, 60-61. [29]क्लेटन विंटर्स, *कमेंट्री आन एज्रा - नहेम्याह - एस्तेर* (एबिलीन, टेक्ससः क्वालिटी पब्लिकेशन्स, 1991), 186.